RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भारत द्वारा चावल का निर्यात : एक आलोचनात्मक विश्लेषण (बासमती चावल के विशेष संदर्भ में)

[1]डॉ0 ऋषि विवेकधर; [2]दुर्गेश कुमार

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, ए0एन0एम0 पी0जी0 कॉलेज, बलिया
[2]शोध छात्र अर्थशास्त्र विभाग, नेहरू ग्राम भारती डीम्ड विश्वविद्यालय कोटवा जमुनीपुर प्रयागराज

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20February 2019

Keywords
कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था, बासमती चावल

ABSTRACT

कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है और इसके द्वारा अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग भी किया जाता रहा है। कृषिगत वस्तुओं के निर्यात भारतीय निर्यातों के एक महत्वपूर्ण अंग रहे हैं और यह प्रत्याशा की जाती है कि भविष्य में भी भारतीय निर्यातों की वृद्धि में कृषिगत उत्पादों के निर्यातों की भूमिका और अंशदान अधिक होगा। वैश्विक बाजार में भारत बासमती चावल का एक महत्वपूर्ण निर्यातक देश है। बासमती चावल लम्बे आकार का महक लिए हुए प्रजाति होती है जिसको कुछ विशिष्ट भौगोलिक दशाओं में उत्पादित किया जाता है। भारत में विशेष रूप से हिमालय के निचले भागों में इसका उत्पादन किया जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में बासमती चावल का उत्पादन जम्मू और कश्मीर, हिमांचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, पश्चिम उ0प्र0 तथा दिल्ली से सटे कुछ क्षेत्रों में किया जाता है। सऊदी अरब, ईरान, UAE, कुवैत, यू0एस0ए0, कनाडा, ओमान इत्यादि बासमती चावल के महत्वपूर्ण आयातक देश हैं।

प्रस्तावना–

भौगोलिक और प्राकृतिक विविधताओं के पश्चात् भी हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है और वर्तमान में भी देश की लगभग दो तिहाई जनसंख्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का निष्पादन देश की अर्थव्यवस्था को हमेशा से प्रभावित करता रहा है। यद्यपि देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान लगातार कम होने की प्रवृत्ति पायी गयी है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में वर्ष 2018–2019 में कृषि का योगदान 16.10 प्रतिशत (वर्ष 2011–12 की कीमतों पर) तथा इस कृषि क्षेत्र द्वारा कुल कार्यशील जनसंख्या के 48.9 प्रतिशत (2011 की जनगणना के आधार पर) लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान किया गया। (आर्थिक समीक्षा 2018–19)

संसार में भारत बासमती चावल का एक महत्वपूर्ण निर्यातक देश है। यह चावल न केवल अपने आकार एवं गंध बल्कि स्वाद के लिए भी वैश्विक स्तर पर जाना जाता हैं। भारत में बासमती चावल की कई प्रजातियां उपजायी जाती है जिसमें देहरादून बासमती, ऊषा बासमती, पंजाब बासमती, हरियाणा बासमती इत्यादि महत्वपूर्ण हैं।

साहित्य समीक्षा–

साहित्य की समीक्षा किसी भी शोध कार्य का प्राथमिक आधार है। इसके बिना शोधकर्ता एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता है जब तक उसे ज्ञात न हो कि संबंधित क्षेत्र में कितना शोध कार्य हुआ है, किस विधि से तथा क्या निष्कर्ष प्राप्त हुए है।

एस0 सुब्रमण्यम (1989)[1] ने अपने शोध में यह बताया कि भारत के परम्परागत निर्यात जैसे चाय, काजू और मसाले का महत्व कृषिगत उत्पादों के निर्यातों में कम हुआ हैं और ऐसे में यह आवश्यक है कि कुछ वैकल्पिक वस्तुओं का ध्यान दिया जाये जिन्हें भविष्य में निर्यात किया जा सके। इन्होनें गैर परम्परागत फलों और प्रसंस्कृत उत्पादों के निर्यात को महत्व प्रदान किया है।

दत्ता त्रेयाकू (1996)[2] ने कृषिगत उत्पादों के निर्यात और आर्थिक विकास के बीच सम्बन्धों का विश्लेषण किया उनका मानना है कि निर्यातों में वृद्धि और आर्थिक विकास परस्पर सम्बन्धित होते हैं। उन्होनें कृषिगत उत्पादों के निर्यातों के प्रदर्शन का भी विश्लेषण किया और यह पाया कि विश्व के कृषिगत उत्पादों के निर्यातों में भारत के कृषिगत उत्पादों के निर्यातों का अंश बहुत कम है और 1930 के बाद भारत के कुल निर्यातों के अंशदान में कमी पायी गयी।

एम. गिरिबाबू (2009)[3] ने बताया कि उदारीकरण के दौर में कृषिगत उत्पादों के निर्यातों के प्रदर्शन में कोई लाभदायक स्थिति नहीं पायी गयी है। इन्होनें अपने अध्ययन में बताया कि कृषिगत उत्पादों के निर्यातों में लगातार उतार चढ़ाव पाये गये। यद्यपि कृषिगत वस्तुओं के उत्पादन में भारत विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है परन्तु निर्यातों में इसे परिवर्तित कर पाने में सफल नहीं रहा है और यह प्रवृत्ति

[1] S. Subramanyam - The competitive structure of India's of Agriculture Export, Indian Economic General 1989
[2] Dutta Treyalu 1996- Export potential of Agricultural Commodities New Economic Environment - Foreign Trade, 29(1).
[3] M.Giri Babu - Economic Reforms and export performes in Indian Agricultural - Indian Economic General 2011.

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उदारीकरण से पूर्व और उदारीकरण के बाद दोनों अवस्थाओं में पायी गयी।

आर0वी0 धर और यू0एस0 राय (2009)[4] के अध्ययन के अनुसार जहाँ भारत के निर्यातों में विनिर्मित वस्तुओं का अंशदान बढ़ा है वहीं कृषिगत उत्पादों के निर्यातों का अंशदान कम हुआ है। कृषिगत वस्तुओं के निर्यात से मिलने वाली आय यद्यपि 1991 से 2008 के बीच बढ़ी परन्तु भारत के कुल निर्यातों में इसके हिस्से में कमीं पायी गई है। बहुत से कृषिगत उत्पादों के निर्यात जैसे कॉफी, चाय, तम्बाकू और काजू नब्बे के दशक में महत्वपूर्ण कृषिगत उत्पादों के निर्यात थे परन्तु बाद में इनके अंशदान में कमी पायी गयी।

सुरेश एण्ड माथुर (2016)[5] के अध्ययन के अनुसार भारत में कृषिगत वस्तुओं के निर्यातों में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी गयी परन्तु कृषिगत वस्तुओं के निर्यातों में वार्षिक वृद्धि सापेक्ष रूप से कम थी जो 16 प्रतिशत पायी गयी जबकि वस्तुगत व्यापार में वृद्धि 19 प्रतिशत पायी गयी। कृषिगत निर्यातों में सबसे महत्वपूर्ण निर्यात बासमती चावल तथा मोटे अनाजों में मक्का रहा। इसके अतिरिक्त मिर्च, धनिया, मसाले महत्वपूर्ण निर्यात रहे। फलों में आम और अंगूर तथा सब्जी में प्याज और आलू सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्यात पाए गये।

भारत द्वारा चावल के निर्यात की संरचना–

वर्ष 1999–2000 में भारत द्वारा कुल 721.3 US Million $ मूल्य का चावल निर्यात किया गया जिसमें बासमती चावल से मिलने वाली निर्यात आय 410.8 US Million $ थी जबकि गैर बासमती चावल से मिलने वाली निर्यात आय 310.5 US Million $ थी। समय के साथ–साथ भारत के द्वारा चावल से निर्यात जन्य आय में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी गयी है। वर्ष 2009–2010 में चावल से प्राप्त कुल निर्यात आय 2373.4 US Million $ थी जिसमें बासमती चावल से मिलने वाली आय 2296.4 US Million $ थी। वहीं गैर बासमती चावल से प्राप्त निर्यात आय मात्र 77 US Million $ थी। वर्ष 2014–2015 में अधिकतम निर्यात आय चावल के संदर्भ में पायी गयी जो 7854.2 US Million $ था जिसमें बासमती चावल का हिस्सा 4511.3 US Million $ और गैर बासमती चावल का हिस्सा 3342.9 US Million $ था। वर्ष 2018–2019 में चावल से प्राप्त कुल निर्यात आय 7722.9 US Million $ थी जिसमें बासमती चावल से प्राप्त आय 4693.7 US Million $ और गैर बासमती चावल से प्राप्त आय 3029.2 US Million $ थी। (स्रोत : CMI Out look .com से एकत्रित विभिन्न वर्षों के आंकड़े)

चावल के निर्यात में औसत दशकीय परिवर्तन : US Million $ के रूप में

सारणी संख्या – 1

Year	Total Export Of Rice (US Mill. $)	Export Of Basmati Rice (US Mill. $)	Export Of Non Basmati Rice (US Mill. $)
1999-2009	**1395.79**	**720.36**	**675.41**
2009-2019	**5889.38**	**3646.77**	**2242.61**

स्रोतः CMI Out look .com से एकत्रित विभिन्न वर्षों के आंकड़े पर आंकलित

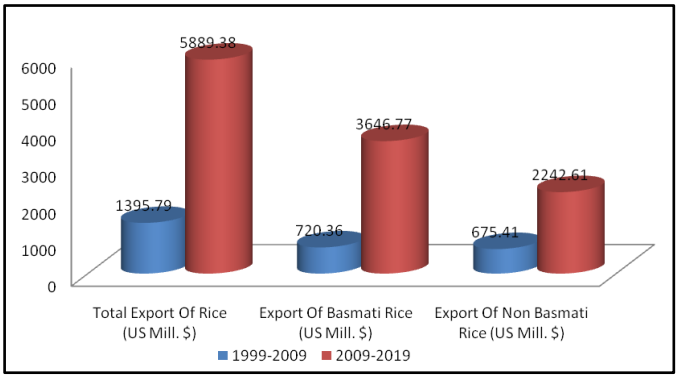

Source: सारणी संख्या 1 के आधार पर निर्मित

सारणी 1 में चावल के निर्यातों में बासमती तथा गैर बासमती चावल के निर्यातों में परिवर्तन का दशकीय आधार पर विश्लेषण किया गया है। जहाँ अध्ययन के प्रथम दशक (1990–2009) के बीच चावल का कुल औसत निर्यात 1395.79 US Million $ था वह अगले दशक (2009–19) में बढ़कर 5889.38 US Million $ हो गया। इस प्रकार दो दशकों के दौरान चावल के निर्यातों में 4.2 गुना वृद्धि पायी गयी। यदि बासमती चावल के निर्यात के संदर्भ में दशकीय विश्लेषण किया जाय तो प्रथम दशक में (1999–2009) में यह औसत 720.36 US Million $ था। जो अगले दशक (2009–19) में औसत 3646.77 US Million $ पाया गया। इस प्रकार विगत दशक की तुलना में वर्तमान दशक में बासमती चावल के निर्यात में लगभग पांच गुना वृद्धि पायी गयी। यदि गैर बासमती चावल के निर्यातों में दशकीय परिवर्तन का विश्लेषण करें तो अध्ययन के पहले दशक में इनका औसत निर्यात 675.41 US Million $ था जो दूसरे दशक 2009–2019 से 2242.61 US Million $ हो गया। इस प्रकार पहले दशक की तुलना में दूसरे दशक में गैर बासमती चावल के निर्यातों में 3.3 गुना वृद्धि पायी गयी है।

[4] DHAR & RAI, 2008 - Agricultural Export of India in the New Economic Environment - Deep & Deep Publication, 2010
[5] Suresh, A. and Mathur, V.C. " Export of Agricultural Commodities from India: Performance and Prospects." India Economic Journal of Agricultural Science, 86 (7), 876-86, 2016

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कुल चावल निर्यात में बासमती चावल के निर्यात का प्रतिशत तथा गैर बासमती चावल के निर्यात का प्रतिशत

सारणी संख्या–2

YEAR	Share of Basmati rice in total Rice Export	share of Non Basmati Rice in Total rice export
1999-00	56.9	43.1
2000-01	73.4	26.6
2001-02	58	42
2002-03	35.2	64.8
2003-04	47.8	52.2
2004-05	41.7	58.3
2005-06	48.9	51.1
2006-07	39.6	60.4
2007-08	36.9	63.1
2008-09	84.8	15.2
2009-10	96.7	3.3
2010-11	98	2
2011-12	64	36
2012-13	57.3	42.7
2013-14	62.2	37.8
2014-15	57.4	42.6
2015-16	59.4	40.6
2016-17	55.9	44.1
2017-18	53.4	46.6
2018-19	60.7	39.3

स्रोत : CMI Out look .com से एकत्रित विभिन्न वर्षों के आंकड़े

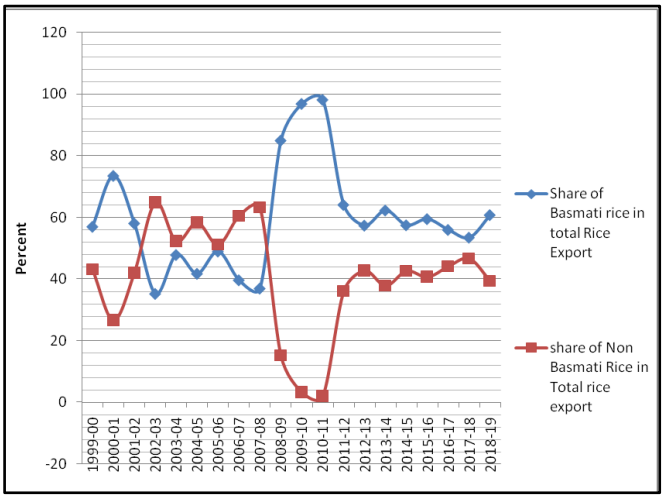

Source: सारणी संख्या 2 के आधार पर निर्मित

सारणी 2 के अनुसार वर्ष 1999–2000 में भारत के कुल चावल निर्यातों में बासमती चावल का अंशदान 56.9% था जो वर्ष 2007–2008 में कम होकर 36.9% हो गया । वर्ष 2008–2009 से बासमती चावल के निर्यात में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गयी और कुल चावल निर्यात में इसका हिस्सा बढ़कर 84.8% हो गया। जो वर्ष 2010–2011 में बढ़कर अधिकतम 98% हो गया। इसके पश्चात कुल चावल के निर्यात में बासमती चावल के अंशदान में कमी पायी गयी और यह घटकर वर्ष 2017–2018 में 53.4% हो गया। वर्ष 2018–2019 में भारत के कुछ चावल निर्यात में बासमती चावल का अंशदान बढ़कर 60.7% पाया गया।

EBR = 5.77 +0.29 TAE

$r=0.96$

$R^2=0.92$

जहाँ EBR =बासमती चावल का निर्यात

TAE = कुल कृषिगत निर्यात

r= सहसम्बन्ध गुणांक

R^2 = Coefficient of Determination

सारणी संख्या 2 के अनुसार यदि कुल चावल निर्यात के अंशदान में गैर बासमती चावल के निर्यात के अंशदान का विश्लेषण करें तो यह वर्ष 1999–2000 में 43.1 प्रतिशत था जो 2000–2001 में कम होकर 26.1 प्रतिशत पाया गया जबकि 2002–2003 में सर्वाधित बढ़कर 64.8 प्रतिशत हो गया पुनः कम होकर वर्ष 2005–2006 में 51.1 तथा वर्ष 2006–2007 में बढ़कर 60.4 प्रतिशत पाया गया। इस उतार चढ़ाव भरे दौर के बीच वर्ष 2010–2011 में न्यूनतम स्तर 2 प्रतिशत पर आ गया। पुनः वर्ष 2017–2018 में बढ़कर 46.6 प्रतिशत तथा वर्ष 2018–2019 में 39.3 प्रतिशत पाया गया।

भारत द्वारा कुल चावल निर्यात में बासमती चावल तथा गैर बासमती चावल के निर्यात में दशकीय परिवर्तन : प्रतिशत रूप में

सारणी संख्या–3

Year	Share of Basmati rice in total Rice Export	share of Non Basmati Rice in Total rice export
1999-2009	52.37	47.62
2009-2019	66.53	33.46

Source: सारणी संख्या 2 के आधार पर आंकलित

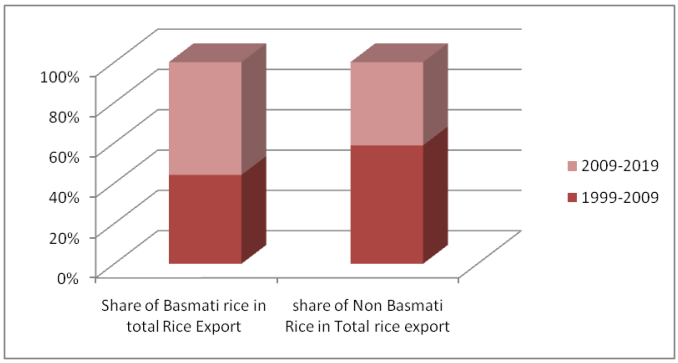

Source: सारणी संख्या 3 के आधार पर निर्मित

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सारणी 3 के अनुसार भारत में कुल चावल निर्यातों में बासमती चावल का अंशदान अध्ययन के प्रथम दशकीय अवधि (1999–2009) के बीच 52.53% हो गया। जबकि अध्ययन की दूसरी अवधि (2009–19) में बढ़कर 66.53 प्रतिशत हो गया।

बासमती चावल के निर्यात की दिशा

कृषिगत वस्तुओं के निर्यातों में बासमती चावल भारत का एक महत्वपूर्ण निर्यात है। वर्ष 1999–2000 में भारत द्वारा 410.8 US Million $ मूल्य के बासमती चावल का निर्यात किया गया जो 2010–11 में बढ़कर 2491.7 US Million $ हो गया 2017–18 में बासमती चावल 4169.2 तथा 2018–19 में 4693.7 US Million $ का निर्यात किया गया इस प्रकार वर्ष 1999–2000 की तुलना में वर्ष 2018–19 में भारत द्वारा बासमती चावल के निर्यात आय में 11.42 गुना की वृद्धि पायी गयी।

इस दौरान एशिया को बासमती चावल का निर्यात जो वर्ष 1999–2000 में 318.1 US Million $ था वर्ष 2010–11 में बढ़कर 2187.2 US Million $ तथा वर्ष 2018–19 में 3976 US Million $ हुआ जो यह दर्शाता है कि एशिया के देशो से बासमती के चावल के माध्यम से निर्यात आय में 12.49 गुना वृद्धि वर्ष 1999–2000 से वर्ष 2018–19 के बीच पायी गयी। (स्रोत : CMI Out look .com से एकत्रित विभिन्न वर्षों के आंकड़े)

बासमती चावल के निर्यात की दिशा में औसत दशकीय परिवर्तन : प्रतिशत के रूप में

सारणी 4

	Decadal change in Basmati Rice expert			
Year	Asia	Europe	America	Africa
1999-2009	75.54	15.87	5.64	2.35
2009-2019	84.19	8.31	8.31	2.44

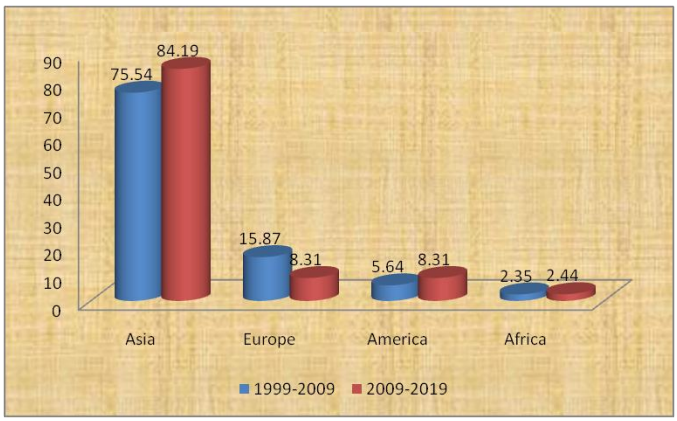

स्रोत : सारणी संख्या 4 के आधार पर निर्मित

सारणी संख्या 4 के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन के पहले दशक (वर्ष 1999–2009) में एशियाई देशों को औसत बासमती चावल का निर्यात 75.54 प्रतिशत था। जो अध्ययन के अगले दशक (वर्ष 2009–2019) में बढ़कर 84.19 प्रतिशत हो गया।

निष्कर्ष–

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विगत दशक की तुलना में वर्तमान दशक में कुल चावल के निर्यातों में बासमती चावल के अंशदान में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी गयी। दूसरी तरफ गैर बासमती चावल का निर्यात जो वर्ष 1999–2009 के बीच 47.62 % था वह अगले दशक 2009–2019 के बीच घटकर 33.46% पाया गया। अतः पिछले दशक की तुलना में वर्तमान दशक में भारत के कुल चावल निर्यात में गैर बासमती चावल के अंशदान में कमी की प्रवृत्ति पायी गयी। इस प्रकार यदि दो दशकों की तुलना करें तो जहां एक तरफ बासती चावल के निर्यात में वृद्धि की प्रवृत्ति दशकीय आधार पर देखी गयी वहीं गैर बासमती चावलों के दशकीय औसत में कमी की प्रवृत्ति देखी गयी।''

इस प्रकार चावल के निर्यात की दिशा का औसत रूप में एशियाई देशों को बासमती चावल के निर्यात में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गयी जबकि इसी अवधि में यूरोप को प्रतिशत के रूप में बासमती चावल के निर्यात में कमी पायी गयी और यह 15.87 प्रतिशत से कम होकर 8.31 प्रतिशत पाया गया जबकि अमेरिका के साथ प्रतिशत के रूप में बासमती चावल में निर्यात में वृद्धि पायी गयी और यह 5.64 प्रतिशत से बढ़कर 8.31 प्रतिशत पाया गया। अफ्रीका के देशों के साथ बासमती चावल के निर्यात में प्रतिशत के रूप में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को प्राप्त नहीं हुआ जहाँ यह पहले दशक (वर्ष 1999–2009) में 2.35 प्रतिशत था वहीं दूसरे दशक मे 2.44 प्रतिशत पाया गया।

सन्दर्भ सूची

1. Mishra, S.K. and Puri, V.K. (2010- 2018) - 'Indian economy' Himalya Publication, New Delhi.
2. Datt. Rudra and Sundaram, K.P.M. (2010- 2018) - 'Indian economy' S. Chand Publication, New Delhi.
3. Hkkjrh; vkfFkZd losZ{k.k 2015&16] 2016&17] 2017&18] 2018&19
4. DHAR & RAI, 2008- Agricultural Export of India in the New Economic Environment - Deep & Deep Publication, 2010
5. इकनामिक एवं पॉलिटीकल विकली, नई दिल्ली – साप्ताहिक.
6. योजना जून 2014 अशोक गुलाटी, सुरभि जैन
7. कुरूक्षेत्र, नई दिल्ली – मासिक.
8. कृषिगत परिदृश्य, मुम्बई – अर्द्धवार्षिक.

RRIJM 2015, All Rights Reserved